डॉ० शैलेन्द्र मोहन मिश्र
स० प्रा० मैथिली विभाग
सी० एम० जे० कॉलेज
दोनवारी हाट , खुटौना
मो०न०9546743796
Email- mishrasm966@gmail.com
B. A.|||

काव्य कारण (हेतु)

एतावता ज्ञात होइत अछि जे काव्यशास्त्री अचार्य लोकनि कोनो ने कोनो रूपमे प्रतिभा , व्युत्पत्ति , अभ्यास आ समाधि कें काव्य हेतु मानैत छथि । अतएव एहि चारु काव्य हेतु सभक विवेचन द्रष्टव्य थिक -

1. प्रतिभा : - प्रतिभा वा शक्ति काव्यक नैमत्तिक कारण अछि । जाहि व्यक्ति मे प्रतिभा होइत अछि वएह सतकाव्यक सृजन मे समर्थ होइत अछि आ कवि कहयबाक अधिकारी होइत अछि । काव्य सृजन मे कवि प्रतिभाक सर्वोपरि स्थान देल गेल अछि आ एहि हेतु इएह तत्व अछि जे एक कवि आ साधारण व्यक्ति मध्य विभाजन रेखाक काज करैत अछि । मुदा प्रतिभा की थिक एवं प्रतिभाक की स्वरूप अछि तकर उत्तर विभिन्न ढंग सँ देलनि अछि ।

मम्मट अपन काव्यप्रकाश मे कहैत छथि जे संस्कार विशेष सँ प्राप्त कवित्वक बीज - शक्ति (प्रतिभा) थिक - " शक्तिः कवित्वबिजरूपः संस्कार विशेषः । "

विद्याभूषण अपन काव्यकोस्तुम मे प्रतिभाक परिभाषा एहि रूपें देलनि अछि -
" प्रज्ञा नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभामता: ।"
अर्थात नव नव अर्थक उन्मेष करयवला प्रज्ञा प्रतिभा थिक । आचार्य रुद्रट अपन काव्यालंकार मे प्रतिभाक परिभाषा मे कहैत छथि जे शक्ति (प्रतिभा) ओकरा कहैत अछि जकरा द्वारा मोनक विस्फुरित अभीष्ट कथन कवि उपयुक्त शब्द सभमे अनायास अभिव्यक्त कए दैत अछि -

मनसि सदा सुसमाधिनि , णमनैकधाभिधेयस्य।
अक्लिष्टानि पदानि च विभान्ति स्यामसौ शक्तिः।।

आचार्य कुन्तक वक्त्रोजीवितम मे कहैत छथि जेपूर्व जन्म आ एहि जन्मक संस्कार सभक परिपाक सँ पुष्ट भेल कवित्व शक्ति प्रतिभा कहबैत अछि -

प्राक्तनाद्यत न संस्कार परिपाक प्रौढा प्रतिभा कविदेव कवि शक्तिः ।

आचार्य वामनक कथन छनि जे प्रतिभा कवित्वक बीज ठीक - ' कवित्वस्य बीजं प्रतिभानम ।' ततपश्चात ओ कहैत छथि कवित्व कारण प्रतिभा अछि , ई प्रतिभा संस्कार विशेष अछि जे जन्मजन्मांतरगत होइत अछि , जकर बिना काव्य निष्पन्न नहि भए सकैछ आ जँ होइत अछि त हास्यास्पद । एहि हेतु वाग्भट्ट सेहो प्रतिभाक सापेक्ष उत्कृष्टता सिद्ध करैत कहैत छथि जे प्रतिभा त अनिवार्य काव्य हेतु अछि , व्युत्पत्ति काव्यक आभूषण अछि आ अभ्यास मात्र ग्राह्य काव्य हेतुक रूपमे होइत अछि , अनिवार्य अथवा आवश्यक नहि -

प्रतिभा कारणं तस्य व्युत्पत्तिस्तु विभूषणम ।

भृशोत्पत्ति कृदभ्यास इत्याद्य कवि संकया।।

हेमचन्द्र सेहो प्रतिभा कें सापेक्ष उत्कृष्ट सिद्ध कयने छथि - " प्रतिभास्य हेतुः ; व्युत्पत्यासाभ्यां संस्कार्या । " अर्थात प्रतिभा टा काव्य हेतु अछि आ व्युत्पत्ति तथा अभ्यास त ओहि प्रतिभाक संस्कार । वाग्भट्ट द्वितीय सेहो इएह बात कहलनि अछि - " व्युत्पत्याभ्यास संस्कृता प्रतिभास्य हेतुः। " अर्थात व्युत्पत्ति आ अभ्यास त प्रतिभा क हेतु अछि काव्यक नहि । काव्यक हेतु प्रतिभा अछि। जयदेव एहि पर जोड़ दैत कहैत छथि -

" प्रतिभैव श्रुताभ्याससहिता कविताम प्रति ।
हेतुर्मुदम्बबीजोत्पत्तिर्लतामिव ।। "

जाहि प्रकार सँ लता माटि आ पानिक संसर्ग सँ लताक रूप धारण करैत अछि , ओहि प्रकार सँ कवि प्रतिभा सेहो व्युत्पत्ति आ अभ्यास सँ युक्त भए कें काव्यक रूप धारण करैत अछि ।

रुद्रट एहि कवि प्रतिभा अथवा शक्तिक दू भेद मानलनि अछि -

" प्रतिभेत्यय रैरुदिता सहतोत्पाद्या चसाद्या भवति।
प्रशां सहजातत्वादनयोस्तु ज्यायसी सहजा ।।"

सहजा अर्थात जन्मजात आ उत्पाद्य अर्थात शास्त्रज्ञान अभ्यास आदिक बल पर विकसित एहि दुनू प्रतिभा मे रुद्रट सहजा कें अपेक्षया वेशी श्रेष्ठ मानैत छथि ; किएक त सहजा प्रतिभा ईश्वर प्रदत्त आ जन्मजात होइत अछि । सहजशक्ति संपन्न कवि कें अपन भीतर विस्फुरित होमय वला काव्य विषय सभक अभिव्यक्ति क लेल श्रम नहि करए पड़ैत छनि । हुनका मोनक भाव स्वतः